चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	19-5-24	08	1-3

3 डिजाइन विकसित करने के लिये हकृवि को मिले पेटेंट के प्रमाण-पत्र

हिसार, 18 मई (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है।

इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है।

इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए हैं।

उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ.अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, मीडिया एडवाइजर के प्रभारी डॉ.योगेश जिंदल डॉ. संदीप आर्य एवं आइपीआर सैल उपस्थित रहे।

हिसार में शनिवार को हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ डिजाइन टीम के सदस्य व अन्य अधिकारी। -हप

डिजाइन की विशेषताएं

वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली : यह ट्रॉली लोहे से बनी है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है। जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं होते उसमें सामग्री गिरने का भय रहता था।

स्कॉलर चेयर: -इस चेयर के उपयोग के दौरान आराम प्रदान करने के लिए पीछे और सीट पर कुशन लगे हैं। लंबे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एर्गोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। इससे थकान कम होती है और पैरों को आराम मिलता है। अध्ययन, ड्राइंग जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए कुर्सी के बाई और एक फोलडेबल पैनल जुड़ा हुआ है।

मूवेबल मिल्किंग स्टूल: बैठने की सुविधा के लिए स्टूल की सीट गद्देदार बनाई गई है। स्टूल के साथ लगे छोटे पहियों की सहायता से बैठकर स्टूल को घुमाकर दूध को आसानी से निकाला जा सकता है। यह स्टूल लोहे से बना है। यह स्टूल काम करते समय पीठ के निचले हिस्से, कुल्हे के जोड़ो और रीड़ की हड्डी को सहायता प्रदान करता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19-5-24	01	1-4

• हकृवि ने विकसित किए वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर और मूवेबल मिल्किंग स्टूल

खेती और दैनिक कार्यों को सुगम बनाएंगे 3 शोध

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए हैं। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य एवं आइपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल उपस्थित रहे।

शोधार्थियों के बनाए डिजायनों की ये हैं मुख्य विशेषताएं

1. वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली: यह ट्रॉली लोहे की है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है। जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं थी व सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था तथा थकान भी होती थी। विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अलग-अलग तकनीक का भी अध्ययन किया और उनकी उपयोगिता और स्थिरता की जांच की।

2. स्कॉलर चेयर: इस चेयर के उपयोग के दौरान आराम प्रदान करने के लिए पीछे और सीट पर कुशन लगे हैं। उचित समर्थन के लिए और पीठ पर तनाव को कम करने के लिए कुर्सी के पिछले हिस्से को थोड़ा तिरछा किया गया है। लम्बे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एर्गोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। इससे थकान कम होती है और पैरों को आराम मिलता है। अध्ययन, ड्राइंग जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए कुर्सी के बाई और एक फोलडेबल पैनल जुड़ा हुआ है। जब पैनल उपयोग में न हो तो उसे वापिस अपनी स्थिति में मोड़ा जा सकता है। यह कुर्सी काम करते समय व्यक्ति के शरीर को सहायता प्रदान करता है और रीड़ की हड्डी में किसी भी प्रकार की असुविधा से बचाता है।

3. मूवेबल मिल्किंग स्टूल: बैठने की सुविधा के लिए स्टूल की सीट गद्देदार बनाई गई है। स्टूल के साथ लगे छोटे पहियों की सहायता से बैठकर स्टूल को घुमाकर दूध को आसानी से निकाला जा सकता है। यह स्टूल लोहे से बना है। इसके एक तरफ गिलास या मग रखने के लिए जगह दी गई है। यह मूवेबल मिल्किंग स्टूल उपयोगकर्ताओं को अनुचित मुद्रा के कारण होने वाले विभिन्न मांसपेशियों के तनाव से बचाता है। यह स्टूल काम करते समय पीठ के निचले हिस्से, कुल्हे के जोड़ो और रीड़ की हड्डी को सहायता प्रदान करता है। स्टूल का मुख्य लाभ व्यक्ति के लिए झुकते और बैठते समय आरामदायक सुरक्षा प्रदान करना है।

हकृवि को मिले पेंटेंट के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19.5.24	04	1-3

भारतीय पेटेंट कार्यालय से 3 डिजाइन को मिले प्रमाणपत्र

हकृवि की दो शोध छात्राओं आयशा व मीनू ने तैयार किए तीनों डिजाइन

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक तीन डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाणपत्र मिल गया है। इनकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने तैयार किया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय को एक साथ तीन डिजाइन प्राप्त हुए हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को बधाई दी। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य एवं आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल उपस्थित रहे।

वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली से कम श्रम में होगा अधिक काम : यह ट्रॉली लोहे की बनी है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड को समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है।

पहले वाली ट्रॉली, जिसमें रॉड नहीं थे और सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता था तथा थकान भी होती थी। विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अलग-अलग तकनीक का भी अध्ययन किया और उनकी उपयोगिता और स्थिरता की जांच की।

हकृवि में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ डिजाइन टीम के सदस्य व अन्य। संस्थान

स्कॉलर चेयर से पीठ को मिलेगा आराम

इस चेयर के उपयोग के दौरान आराम प्रदान करने के लिए पीछे की ओर सीट पर कुशन लगे हैं। उचित समर्थन के लिए और पीठ पर तनाव को कम करने के लिए कुर्सी के पिछले हिस्से को थोड़ा तिरछा किया गया है। लंबे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एर्गोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। अध्ययन, ड्राइंग के लिए कुर्सी के बाईं और एक फोल्डेबल पैनल जुड़ा हुआ है। यह कुर्सी काम करते समय व्यक्ति के शरीर को सहायता प्रदान करती है और रीढ़ की हड्डी में किसी भी प्रकार की असुविधा से बचाती है।

मूवेबल मिल्किंग स्टूल से पशुओं का दूध निकालने में होगी सुविधा

बैठने की सुविधा के लिए इस स्टूल की सीट गद्देदार बनाई गई है। स्टूल के साथ लगे छोटे पहियों की सहायता से बैठकर स्टूल को घुमाकर पशुओं के दूध को आसानी से निकाला जा सकता है। यह स्टूल लोहे से बना है। यह मूवेबल मिल्किंग स्टूल उपयोगकर्ताओं को अनुचित मुद्रा के कारण होने वाले विभिन्न मांसपेशियों के तनाव से बचाता है। यह स्टूल काम करते समय पीठ के निचले हिस्से, कूल्हे के जोड़ो और रीढ़ की हड्डी को सहायता प्रदान करता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि-भूमि	19-5-24	16	1-8

वैज्ञानिकों की उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की सराहना

एचएयू को तीन डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय की ओर से मिले प्रमाण-पत्र

इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक तीन डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली

यह ट्रॉली लोहे से बनी है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं थे व सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था तथा थकान भी होती थी। विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अलग-अलग तकनीक का भी अध्ययन किया और उनकी उपयोगिता और स्थिरता की जांच की।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ डिजाइन टीम के सदस्य व अन्य अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ तीन डिजाइन प्राप्त हुए हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य एवं आइपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19-5-24	06	1-3

हकृवि को तीन डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय से मिले प्रमाण-पत्र

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्राली, स्कालर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक तीन डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है।

इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे। इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डा. बीना यादव, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य एवं आइपीआर सैल के प्रभारी डा. योगेश जिंदल उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज के साथ डिजाइन टीम के सदस्य व अन्य अधिकारी

उपरोक्त डिजाइनों की ये हैं मुख्य विशेषताएं

• **वर्सेटाइल हैंडी ट्राली :** यह ट्राली लोहे से बनी है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्राली के तीनों किनारों पर दिए गए राड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्राली जिसमें राड नहीं थे व सामग्री गिरने का भी भय रहता था।

• **मूवेबल मिल्किंग स्टूल :** बैठने की सुविधा के लिए स्टूल की सीट गद्देदार बनाई गई है। छोटे पहियों की सहायता से बैठकर स्टूल को घुमाकर दूध को आसानी से निकाला जा सकता है। इसके एक तरफ गिलास या मग रखने के लिए जगह दी गई है। यह मूवेबल मिल्किंग स्टूल उपयोगकर्ताओं को अनुचित मुद्रा के कारण होने वाले विभिन्न मांसपेशियों के तनाव से बचाता है। यह स्टूल काम करते समय पीठ के निचले हिस्से, कुल्हे के जोड़ो और रीड़ की हड्डी को सहायता प्रदान करता है।

• **स्कालर चेयर :** इस चेयर के उपयोग के दौरान आराम प्रदान करने के लिए पीछे और सीट पर कुशन लगे हैं। पीठ पर तनाव को कम करने के लिए कुर्सी के पिछले हिस्से को थोड़ा तिरछा किया गया है। लम्बे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एरोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। इससे थकान कम होती है और पैरों को आराम मिलता है। अध्ययन, ड्राइंग जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए कुर्सी के बाई और एक फोलडेबल पैनल जुड़ा हुआ है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19-5-24	05	3-6

हकृवि को 3 डिज़ाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय की ओर से मिले प्रमाण-पत्र

हिसार, 18 मई (विरन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए हैं।

उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे। यह ट्रॉली लोहे से बनी है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है। जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं थे व सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था तथा थकान भी होती थी। विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अलग-अलग तकनीक का भी अध्ययन किया और उनकी उपयोगिता और स्थिरता की जांच की। इस चेयर के उपयोग के दौरान आराम प्रदान करने के लिए पीछे और सीट पर कुशन लगे हैं। उचित समर्थन के लिए और पीठ पर तनाव को कम करने के लिए कुर्सी के पिछले हिस्से को थोड़ा तिरछा किया गया है। लम्बे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एर्गोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। इससे थकान कम होती है और पैरों को आराम मिलता है। अध्ययन, ड्राइंग जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए कुर्सी के बाई और एक फोलडेबल पैनल जुड़ा हुआ है। जब पैनल उपयोग में न हो तो उसे वापिस अपनी स्थिति में मोड़ा जा सकता है। यह कुर्सी काम करते समय व्यक्ति के शरीर को सहायता प्रदान करता है और रीड़ की हड्डी में किसी भी प्रकार की असुविधा से बचाता है।

कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज के साथ डिजाइन टीम के सदस्य व अन्य अधिकारी।

वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की सराहना

बैठने की सुविधा के लिए स्टूल की सीट गद्देदार बनाई गई है। स्टूल के साथ लगे छोटे पहियों की सहायता से बैठकर स्टूल को घुमाकर दूध को आसानी से निकाला जा सकता है। यह स्टूल लोहे से बना है। इसके एक तरफ गिलास या मग रखने के लिए जगह दी गई है। यह मूवेबल मिल्किंग स्टूल उपयोगकर्ताओं को अनुचित मुद्रा के कारण होने वाले विभिन्न मांसपेशियों के तनाव से बचाता है। यह स्टूल काम करते समय पीठ के निचले हिस्से, कुल्हे के जोड़ो और रीड़ की हड्डी को सहायता प्रदान करता है। स्टूल का मुख्य लाभ व्यक्ति के लिए झुकते और बैठते समय आरामदायक सुरक्षा प्रदान करना है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य एवं आइपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19-5-24	02	2-4

हकृवि को 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय से मिले प्रमाण-पत्र

हिसार, 18 मई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज के साथ डिजाइन टीम के सदस्य व अन्य अधिकारी

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए हैं। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं थे व सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था तथा थकान भी होती थी।

विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अलग-अलग तकनीक का भी अध्ययन किया और उनकी उपयोगिता और स्थिरता की जांच की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	19.05.2024	--	--

हकृवि को 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय की ओर से मिले प्रमाण-पत्र

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने

डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमश: 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे।

उपरोक्त डिजाइनों की ये हैं मुख्य विशेषताएं:

वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली: यह ट्रॉली लोहे से बनी है। इसे मांसपेशियों

वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की सराहना, विश्वविद्यालय के लिए बताई गौरव की बात

के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है। जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं थे व सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	18.05.2024	--	--

हकृवि को डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय की ओर से मिले प्रमाण-पत्र

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आयशा और मीनू ने किया।

कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज के साथ डिजाइन टीम के सदस्य व अन्य अधिकारी

कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए है। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य एवं आइपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	18.05.2024	--	--

हकृवि को 3 डिजाइन विकसित करने पर मिला पेटेंट

पल पल न्यूज: हिसार, 18 मई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली, स्कॉलर चेयर व मूवेबल मिल्किंग स्टूल नामक 3 डिजाइन विकसित करने पर भारतीय पेटेंट कार्यालय ने डिजाइन का पंजीकरण प्रदान किया है। इन सभी डिजाइन को भारत सरकार की ओर से प्रमाण पत्र मिल गया है। जिसकी डिजाइन संख्या क्रमशः 386671-001, 386669-001 तथा 386668-001 है। इन सभी डिजाइन को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु महता की देखरेख में दो शोध छात्राओं आवशा और मीनू ने किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय को एक साथ 3 डिजाइन प्राप्त हुए हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों

से भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयासरत रहने की अपील की है ताकि विश्वविद्यालय का नाम यूं ही रोशन होता रहे। वर्सेटाइल हैंडी ट्रॉली: यह ट्रॉली लोहे से बनी है। इसे मांसपेशियों के तनाव और थकान को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारी भार को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है। जिससे उत्पादकता बढ़ती है। ट्रॉली के तीनों किनारों पर दिए गए रॉड समर्थन प्रदान करती है, जिससे भारी सामग्री गिरने या फिसलने से बचती है। उल्लेखनीय है कि पहले वाली ट्रॉली जिसमें रॉड नहीं थे व सामग्री गिरने का भी भय रहता था। उस ट्रॉली द्वारा काफी कम मात्रा में सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था तथा थकान भी होती थी। विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अलग-अलग तकनीक का भी अध्ययन किया और उनकी उपयोगिता और स्थिरता की जांच की। स्कॉलर चेयर: इस चेयर के उपयोग के दौरान आराम प्रदान करने के लिए पीछे और सीट पर कुशन लगे हैं। उचित समर्थन के लिए और पीठ पर तनाव को कम करने के लिए कुर्सी के पिछले हिस्से को थोड़ा तिरछा किया गया है। लम्बे समय तक बैठने पर आराम में सुधार के लिए एर्गोनोमिक फुट रेस्ट प्रदान किया गया है। इससे थकान कम होती है और पैरों को आराम मिलता है। अध्ययन, ड्राइंग जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए कुर्सी के बाईं और एक फोलडेबल पैनल जुड़ा हुआ है। जब पैनल उपयोग में न हो तो उसे वापिस अपनी स्थिति में मोड़ा जा सकता है। यह कुर्सी काम करते समय व्यक्ति के शरीर को सहायता प्रदान करता है और रीढ़ की हड्डी में किसी भी प्रकार की असुविधा से बचाता है। मूवेबल मिल्किंग स्टूल: बैठने की सुविधा के लिए स्टूल की सीट गद्देदार बनाई गई है। स्टूल के साथ लगे छोटे पहियों की सहायता से बैठकर स्टूल को घुमाकर दूध को आसानी से निकाला जा सकता है। यह स्टूल लोहे से बना है। इसके एक तरफ गिलास या मग रखने के लिए जगह दी गई है। यह मूवेबल मिल्किंग स्टूल उपयोगकर्ताओं को अनुचित मुद्रा के कारण होने वाले विभिन्न मांसपेशियों के तनाव से बचाता है। यह स्टूल काम करते समय पीठ के निचले हिस्से, कूल्हे के जोड़ो और रीढ़ की हड्डी को सहायता प्रदान करता है। स्टूल का मुख्य लाभ व्यक्ति के लिए झुकते और बैठते समय आरामदायक सुरक्षा प्रदान करना है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. वीना यादव, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य एवं आईपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर न्यूज	17.05.2024	--	--

पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पेड़ पौधों की आवश्यकता : प्रो. काम्बोज

नभ-छोर न्यूज ▸▸ 16 मई

हिसार। जिस प्रकार शरीर को पोषण के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पेड़-पौधों की आवश्यकता होती है। पेड़-पौधे पर्यावरण की अशुद्धियों को सोख लेते हैं और हमें शुद्ध प्राणदायिनी वायु देते हैं। पर्यावरण व भूमि संरक्षण के लिए मौजूदा समय में पौधारोपण जरूरी है। पौधारोपण कर पर्यावरण को बचाने का संकल्प हम सभी को लेने की जरूरत है। हमारा कर्तव्य है कि पर्यावरण सुधार के लिए अधिक से अधिक संख्या में पौधारोपण करना चाहिए। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे 17वें विश्व एग्री-टूरिज्म दिवस के अवसर पर एग्री-टूरिज्म सैंटर में वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान बतौर

मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि पौधे हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जीवन का आधार हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को पौधा अवश्य लगाना चाहिए। पेड़-पौधों की कमी से निरंतर पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधारोपण बहुत जरूरी है। प्रो. काम्बोज ने बताया कि एग्री-टूरिज्म सेंटर को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य कृषि अनुसंधानों व प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना और प्रकृति को स्वच्छ रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करना है। साथ ही एग्री-इको पर्यटन से लेकर शैक्षणिक मूल्यों के प्रति दूसरों को प्रेरित करना है। इसके अलावा स्कूलों व कॉलेजों के विद्यार्थियों को जैव-विविधता के बारे में जानने का भी अवसर मिलेगा। एग्री-टूरिज्म सेंटर (कृषि पर्यटन केंद्र) को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में फूड कोर्ट व ट्री-हाउस जैसे कई अन्य आकर्षण भी जोड़े जा रहे हैं। वनस्पति विज्ञान और पादप शरीर क्रिया विज्ञान में देशी और विदेशी पौधों की प्रजातियों का संग्रह किया गया है। जैव-विविधता वाले लगभग 550 पौधों की प्रजातियां यहां देखी जा सकती हैं। एग्री-टूरिज्म सेंटर के अध्यक्ष डॉ. अरविंद मलिक ने बताया कि सेंटर में प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में लोग आ रहे हैं व यह संख्या लगातार बढ़ रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20-5-24	06	1-5

दैनिक भास्कर
आप पढ़ रहे हैं देश का एकमात्र नो निगेटिव अखबार

विश्व मधुमक्खी दिवस पर विशेष • भारत से हर वर्ष 76 देशों में होता है 79, 929 मीट्रिक टन शहद का निर्यात

भारत के शहद की यूएसए, यूएई और कनाडा में मांग, हरियाणा में सालाना करीब 5800 मीट्रिक टन शहद का हो रहा है उत्पादन

यशपाल सिंह | हिसार

अनुमानित 1.3 लाख मीट्रिक टन वार्षिक उत्पादन के साथ भारत दुनिया के सबसे बड़े शहद उत्पादक देशों में से एक है। देश में 4 लाख से ज्यादा लोग मधुमक्खी पालन करते हैं और 34 लाख के करीब मधुमक्खी कॉलोनियां पाली जा रही हैं। वहीं, हरियाणा में सालाना करीब 5800 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन हो रहा है।

साल 2022-23 के दौरान भारत से 79,929 मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया गया है। भारत 76 देशों को शहद निर्यात करता है। देश का मधु उत्पादन लगभग 1.3 लाख टन है परंतु यह कुल क्षमता का 15 से 20 प्रतिशत ही है। देश में 100 लाख टन शहद व लगभग 15 हजार टन मधुमक्खी मोम उत्पादन की क्षमता है। मधुमक्खियां और अन्य परागणकर्ता दुनिया के 35 प्रतिशत फसल उत्पादन को प्रभावित करते हैं। जिससे दुनियाभर में 87 प्रमुख खाद्य फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी होती है, साथ ही कई पौधों से प्राप्त औषधियां भी मिलती हैं। फसल, जलवायु और भूमि के अनुसार मधुमक्खी परपरागण द्वारा 2 से 300 गुणा तक फसलों की उपज में बढ़ोतरी पाई गई है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कार्यरत कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव के अनुसार हरियाणा में 2500 से ज्यादा लोग मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। प्रदेश में सालाना करीब 5800 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन हो रहा है। प्रदेश के उत्तर पूर्वी जिलों करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, अम्बाला में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है। जहां 80 प्रतिशत तक मौनपालक हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार गहन कृषि पद्धतियां, भूमि उपयोग परिवर्तन, रसायनों के प्रयोग और जलवायु परिवर्तन आदि के कारण वर्तमान में मधुमक्खियों की प्रजातियों के विलुप्त होने की दर सामान्य से 100 से एक हजार गुणा ज्यादा है। विश्व मधुमक्खी दिवस-2024 'युवा मधुमक्खियों के साथ जुड़े' विषय पर केंद्रित है।

मधुमक्खियां 87 फसलों के लिए लाभकारी, प्रभावित करती हैं 35% तक फसल उत्पादन

जानिए... किस देश में कितने शहद का निर्यात होता है

शहर	निर्यात
यूएसए	63,618.63
यूएई	6,609.23
सऊदी अरब	2,090.20
लिबिया	1,110.58
मोरक्को	962.09
कनाडा	585.55
नेपाल	824.10
कतर	704.11
बांग्लादेश	634.77
कुवैत	363.24

(मीट्रिक टन में)

भारतीय शहद की विश्वभर में मांग है। हर साल भारत 76 देशों में 79,929 एमटी शहद का निर्यात करता है। हकृवि मधुमक्खी पालन पर शोध कार्य के साथ-साथ मधुमक्खी पालन का सरल एवं कम अवधि का प्रशिक्षण भी करवा रहा है।

-प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार।